SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2022 Special Issue 04 Volume III

विश्व हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र का योगदान

* कार्यकारी संपादक *

डॉ. कांबळे आशा दत्तात्रय

हिंदी विभाग प्रमुख

कै.शं.दे.पाटील उर्फ बाबुराव दादा कला, वाणिज्य तथा

कै. भाऊसाहेब म.दि.सिसोदे विज्ञान महाविद्यालय, शिंदखेडा

* अतिथि संपादक *

डॉ. तुषार पाटील

(प्र. प्राचार्य)

कै.शं.दे.पाटील उर्फ बाबुराव दादा कला, वाणिज्य तथा

कै. भाऊसाहेब म.दि.सिसोदे विज्ञान महाविद्यालय, शिंदखेडा

* सह-संपादक *

डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील

* सह-संपादक *

डॉ. राहूल सुरेश भदाणे

कै.शं.दे.पाटील उर्फ बाबुराव दादा कला, वाणिज्य तथा

कै. भाऊसाहेब म.दि.सिसोदे विज्ञान महाविद्यालय, शिंदखेडा

Chief Editor : **Dr. Girish S. Koli**, AMRJ

For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2022 Special Issue 04 Volume III SJIF Impact- 5.54

Index

Sr.No	*Title of the Paper*	Author's Name	Pg.No
1	हिंदी के उन्नयन में महाराष्ट्र का योगदान	प्रो. गजानन चव्हाण	06
2	राष्ट्रभाषा प्रचार समिति	डॉ. हेमचन्द्र वैद्य	14
3	हिंदी भाषा के विकास में महाराष्ट्र का संस्थात्मक योगदान	प्रो.रणजीत जाधव	18
4	हिंदी के प्रचार–प्रसार में डॉ. अंबादास देशमुख जी का योगदान	डॉ. आशा दत्तात्रय कांबले	24
5	हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र के संतों, क्रांतिकारियों ,समाज सुधारकों,कलाकारों एवं साहित्यकारों का योगदान	प्रा. डॉ. गौतम कुवर	27
6	हिंदी भाषा के उन्नयन में खान्देश का योगदान (डॉ. मधुकर खराटे एवं डॉ. शिवाजी देवरे के विशेष संदर्भ में)	डॉ. अश्फ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर	30
7	मालती जोशी का हिंदी साहित्य में योगदान	डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे	34
8	हिंदी भाषा के विकास में अहिंदीभाषी कवियों का योगदान	डॉ. आर. के. जाधव	37
9	विश्वभाषा हिंदी के उन्नयन में महाराष्ट्र का योगदान	डॉ.सूर्यकांत शिंदे	41
10	हिंदी भाषा के विकास में श्री. शि. वि. प्र. संस्था का साहित्य एवं वाणिज्य महाविद्यालय, धुले का योगदान	प्रा. डॉ. अभयकुमार रमेश खैरनार	44
11	हिन्दी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र का योगदान	प्रा. डॉ. वनिता त्र्यंबक पवार - निकम	49
12	विश्वभाषा हिंदी के उन्नयन में राजभाषा समितियों का योगदान	प्रा. डॉ. सुषमा कोंडे	52
13	हिंदी भाषा के उन्नयन में कवि दामोदर मोरे का योगदान	डॉ. संजय रणखांबे	55
14	कवि मनोज सोनकर का हिंदी साहित्य में योगदान	डॉ. मनोहर हिलाल पाटील	60
15	हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र के बाबूराव विष्णु पराडकर की पत्रकारिता का योगदान	डॉ. संतोष रायबोले	64
16	मराठी संतों का साहित्य और भक्ति आंदोलन	प्रा. रामहरि काकडे	67
17	डॉ. सतीश यादवजी का रचनाकार्य	प्रा. नयन भादुले–राजमाने	71
18	हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र के साहित्यकार संत विनोबा भावे का योगदान	प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर	75
19	हिन्दी भाषा के उन्नयन में संत नामदेव का योगदान	डॉ. भारती वळवी (वाघ)	79
20	हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का योगदान	प्रो. कॅप्टन शिंदे अनिता मधुकर	82
21	व्यक्ति एवं रचनाधर्मिता : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	डॉ.बालाजी गायकवाड	84
22	संत नामदेव का हिंदी काव्य में योगदान	डॉ. निंबा लोटन वाल्हे	88
23	हिंदी भाषा के विकास में डॉ. अभयकुमार का योगदान	डॉ. विनोद विश्वासराव पाटील	90
24	हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र के विविध संस्थाओं का योगदान	डॉ. मारोती यमुलवाड	94

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2022 Special Issue 04 Volume III SJIF Impact- 5.54

17

डॉ. सतीश यादवजी का रचनाकार्य

प्रा. नयन भादुले–राजमाने
गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी रात्रीचे वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर.
मो.न. 8805426071 Email-bhadulenayan13@gmail.com

राजभाषा से जुड़ना एक अर्थ में 'राष्ट्र' से जुड़ना होता है। कहा जाता है कि " बिना राष्ट्रभाषा के राष्ट्र गूंगा होता है।" प्रस्तुत उक्ति के अनुसार राष्ट्रीय चेतना को व्यक्त करने वाली भाषा हिंदी रही हैं। हिंदी के माध्यम से श्रोताओं और पाठकों के मन-मस्तिष्क पर छाने वाले व्यक्तित्व के धनी है डॉ. सतीशजी यादव.

राजभाषा से जुड़ना एक अर्थ में 'राष्ट्र' से जुड़ना होता है। कहा जाता है कि 'बिना राष्ट्रभाषा के राष्ट्र गूंगा होता है,' प्रस्तुत उक्ति के अनुसार राष्ट्रीय चेतना को व्यक्त करने वाली भाषा हिंदी रही हैं। हिंदी के माध्यम से श्रोताओं और पाठकों के मन-मस्तिष्क पर छाने वाले व्यक्तित्व के धनी है डॉ. सतीश यादव।

डॉ. सतीश यादव हिंदी के अध्यापक हैं। वह एक आलोचक एवं लेखक के रूप में ज्यादा जाने जाते है। विगत २६ सालों से शिवाजी महाविद्यालय, रेणापुर में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। तथा स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के हिंदी शोध-निर्देशक के रूप में कार्यरत है। यू.जी.सी. द्वारा बृहत शोध परियोजना के अंतर्गत उन्होंने शोध प्रकल्प पूरा किया है। विश्वविद्यालय के हिंदी अध्ययन मंडल के सदस्य के रूप में १० वर्षो से कार्यरत हैं। उन्होंने महाविद्यालय में पूर्णकालिक प्राचार्य के रूप में भी कार्य किया है। वे साहित्य, समाज, कला और संस्कृतिक क्षेत्र में कार्यरत हैं। लातूर जिला हिंदी साहित्य परिषद के अध्यक्ष के रूप में वे विद्यमान हैं। उनके नेतृत्व में हिंदी साहित्य परिषद ने कार्यशाला, संगोष्ठी, नाटयमंचन तथा भवन निर्माण जैसे कार्य पूर्ण किए हैं। इस साल वे तीसरी बार परिषद के अध्यक्ष के रूप में चुने गये।

निरंतर अध्ययन, अध्यापन-लेखन करनेवाले मूर्धन्य चिंतक, सुधी समीक्षक, श्रेष्ठ अनुवादक डॉ. सतीश यादव का जन्म माता प्रभावती तथा पिता वसंतराव के एक कृषक परिवार में हुआ। उनका बचपन रेणापुर तहसील के एक छोटे से देहात मुरढव में बीता। यहीं पर उनकी दसवीं तक की शिक्षा पूरी हुई। किसान परिवार से होने के कारण अत्यंत सामान्य आर्थिक परिस्थिति से दिन गुजरे। ११ वी से एम.ए. तक की पढ़ाई दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर में हुई। संयोग से एम. ए. होने के तुरंन्त बाद वे अध्यापक बनें। उन्होंने पहली बार महसूस किया कि अपने छात्रों के लिए अपनी पूरी क्षमताओं का उपयोग करना चाहिए। इसका परिणाम यह हुआ कि मैं क्या हूँ? मैं कैसे हूँ? मैं कौन हूँ? इन सवालों से मानसिक संघर्ष चलता रहा। यहाँ से जो पढने का भूत सवार हुआ तो उतरने का नाम ही नहीं ले रहा था। पाँच साल तक हिंदी और मराठी की सबसे अच्छी कृतियाँ पढ़ी। इस कारण आत्मविश्वास बढ़ा, ज्ञान का विस्तार हुआ, चीजें धीरे-धीरे समझ में आने लगी जैसे साहित्य क्या है? साहित्य आकलन कैसे किया जाता है? इसके बाद पीएच्.डी. उपाधि ग्रहण की। दुर्घटनावश भी कभी मंच पर ना जाने वाले व्यक्तित्व ने जब छात्रों के लिए अपने आप को इतना तराशा तो बदलाव तो होना ही था। इसका परिणाम ये हुआ कि उनकी अभिव्यक्ति को देखकर, सुनकर रा. रं. बोराडे, फ.मुं. शिंदे जैसे महनीय व्यक्तित्व ने सराहा।

नोकरी के प्रथम वर्ष में विद्यार्थी संसद का काम करने का मौका मिला। विद्यार्थीयों के लिए कुछ करना था। आज तक कभी निबंध भी न लिखनेवाले व्यक्तित्व ने आठवें दिन नाटक लिखकर तैयार किया। नाटक का शीर्षक था 'विस्कटलेले चेहरे'। जिंदगी जीने के लिए गाँव छोड़कर बंबई जाने वाले लोगों की कश्मकश को व्यक्त करने की कोशिश इस नाटक के माध्यम से की गई। आगे जाकर हिंदी में भी लेखन किया लेकिन लगभग शोधपत्र के रूप में रहा।

सन् २०१० से जो निरंतर स्तरीय लेखन का सिलसिला चला वह आज भी जारी है --- डॉ. सतीश यादव के कुल चार समीक्षा ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं।

१) हिंदी के कालजयी उपन्यास, विकास प्रकाशन, कानपुर २) आधुनिक विमर्श : विविध आयाम, मानसी प्रकाशन, दिल्ली, ३) आलोचना का स्वराज, यश पब्लिकेशन, दिल्ली, ४) अज्ञेय और मढेकर का रचना-कर्म, यश पब्लिकेशन, दिल्ली

'हिंदी के कालजयी उपन्यास', विकास प्रकाशन द्वारा प्रकाशित ३५६ पृष्ठों के इस ग्रंथ में उन्होंने एक गंभीर समस्या को उतना ही गंभीरता से उठाया है। 'गोदान' और 'रागदरबारी' इन दोनों उपन्यासों की अपनी विशेषताएँ हैं। एक उपन्यास में स्वातंत्र्यपूर्व काल का गाँव है तो दूसरे में स्वतंत्रता के लगभग बीस वर्षों बाद विभिन्न विकास योजनाओं के कारण गाँव में जो चल रहा है, वह केंद्र में है। दोनों उपन्यास हिंदी उपन्यास साहित्य में 'मील के पत्थर' हैं। दोनों उपन्यास अपने-अपने वर्तमान के साथ गहरे रूप से जुडे हुए हैं। डॉ. सतीश यादव के मतानुसार, "इस प्रकार की कृतियाँ समकालीनता से निकलकर 'सर्वकालीकता' के आयामों को तलाशती हैं।[1] 'कालजयी' उपन्यासकारों ने अनुभूति की नई जमीन तैयार की है और नये

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2022 Special Issue 04 Volume III SJIF Impact- 5.54

क्षितिजों को भी स्पर्श किया है। 'गोदान' और 'राग दरबारी' इस अर्थ में द्रष्टव्य हैं। 'गोदान' में पहली बार किसान जीवन की दर्दनाक तस्वीर पेश हुई है। इस उपन्यास ने निश्चित ही एक ओर हिंदी उपन्यासों को दिशा दी तथा अनुभूति की जमीन भी तलाश ली। इस उपन्यास में प्रेमचंद हमें सदा ही विचलित और परेशान करते हैं, हमें झकझोरते है, हमारी लुप्त चेतना पर दस्तकें देते हैं, हमें आत्मविस्मृत नहीं करते, इंद्रियों से आगे जाकर हमें विचार के स्तर पर उकसाते है। 'गोदान' चौथे दशक के हिंदुस्थान के गाँवों की गाथा है।[२]

'राग दरबारी' उपन्यास भी अनुभूति की नई जमीन तलाशने और अनुभूति के नए क्षितिजों का स्पर्श करने का प्रयास करता है। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड की समग्र भारतीय जीवन की दुर्दशा का चित्रांकन यहाँ करता है। गाँवों की बदसूरत और मूल्यहीन जिंदगी को बेबाक उघाड़ता है। राजनीति की क्रूरता, शिक्षा संस्थानों में व्याप्त मूल्यहीनता, सहकारिता के क्षेत्र में बढ़ता भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद सबकुछ झेलकर भी कुछ न कुछ पाने की विवशता का यथार्थ चित्रण करता है। वास्तव में श्रीलाल द्वारा स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जिंदगी की विरुपताओं का बेबाक चित्रण करना भी बड़ा साहस का काम था। परिवेश की भयावह क्रूरता से पाठक को रूब-रू कराने वाला उपन्यास हमें निश्चित ही अंतर्मुख कर देता है।[३]

आधुनिक विमर्श: विविध आयाम, मानसी पब्लिकेशन्स से प्रकाशित ११२ पृष्ठों के इस ग्रंथ में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेख संकलित है। 'अ' विभाग 'कविता' के अंतर्गत तीन लेख है। 'छायावादोत्तर काव्य और हरिवंशराय बच्चन' नामक इस लेख में पुरानी मान्यता का खंडन करते हुए अनेक प्रमाण देकर यह कहने का साहस किया है कि बच्चन कवि नहीं अपितु बहुत बड़े गीतकार हैं। 'अज्ञेय की कविता' यह लेख काव्यसंपदा से संबंधित है। अज्ञेय के समग्र काव्य-संपदा की समीक्षा इस लेख में की है। 'उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ: एक टिप्पणी 'इस लेख के माध्यम से केदारनाथ की कविताओं में कुतूहल, जिज्ञासा और आंतरिक बेचैनी का अहसास है, इस दृष्टि से समीक्षा की है। 'ब' विभाग 'आलोचना' के अंतर्गत दस लेख हैं। हिंदी संत साहित्य की प्रासंगिकता, वर्तमान युग में कबीर की प्रासंगिकता, हिन्दी की प्रथम स्त्रीवादी गद्य लेखिका: महादेवी वर्मा, मानवमुक्ति का उद्‌गाता: प्रेमचंद, सामाजिक चेतना के बहाने नारी देह-गाथा : नाच्यौ बहुत गोपाल, समकालीन हिन्दी आलोचना के संकट, उत्तर शती का साहित्य : स्वरूप एवं विशेषताएँ, दलित राजनीति के विचलनों की कथा- 'नरवानर', स्त्री विमर्श : सिध्दांत एवं व्यवहार'सीमन्तनी उपदेश तथा स्त्री-पुरूष तुलना: एक स्त्रीवादी आकलन। स्त्रीविमर्श के बारे में डॉ. सतीश यादव कहते है, "स्त्रियों को समाज में समानता और स्वातंत्रता तभी मिल सकती है, जब समाज में वर्ग के आधार पर ही नहीं जेंडर के आधारपर भी भेदभाव न हो। मुक्त नहीं होना चाहती है। वह मुक्त होना चाहती है रूढ़ियों से, पुरुषी अंह से, स्त्री को गुलाम बनानेवाली समस्त इकायों से। मैं यह दृश्य देखने के लिए लालायित हूँ कि स्त्री-पुरुष की सफलताओं के नीचे दबती चली जाय बल्कि सफलता दोनों के हिस्से हों और मुक्त आकाश भी।"[४] उपर्युक्त लेखों में लेखक की नूतन समीक्षा दृष्टि कर परिचय मिलता है। 'क' विभाग 'भाषा' के अंतर्गत चार लेख हैं। साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में हिंदी, भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ और हिन्दी भाषा, भूमंडलीकरण का भाषाओं पर प्रभाव (हिंदी भाषा के संदर्भ में), हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता: स्वरूप एवं संदर्भ। इन चार लेखों में हिंदी भाषा की स्थिति पर विचार किया है। तथा समीक्षात्मक दृष्टि से प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

'आलोचना का स्वराज' यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स के द्वारा प्रकाशित १५२ पृष्ठों का ग्रंथ है। इस ग्रंथ में 'अ' भाग में 'विचार का स्वराज' अंतर्गत दलित साहित्य की वैचारिकी, हिंदी साहित्य में दलित विमर्श, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के चिंतन का दलित साहित्य पर प्रभाव 'ब' विभाग में 'विमर्शों का दौर' अंतर्गत समकालीन स्त्री लेखन के सामाजिक सरोकार, इस आलेख में डॉ. सतीश यादव के मतानुसार, "समकालीन स्त्री-लेखिकाएँ स्त्री-विमर्श को देह-विमर्श में रिडफ्यूस करने की कुत्सित चाल का शिकार ही नहीं, देह के जरिए अपने को भीतर तक चीन्हने, संवारने की चिंताभरी कोशिश है।"[५] किसान का संघर्ष और हिंदी कथा-साहित्य, भूमंडलीकरण और समकालीन हिन्दी उपन्यास, समकालीन हिंदी उपन्यास : एक मूल्यांकन, सांप्रदायिकता तथा जातिवाद की आग में झुलसते देश की कथा-व्यथा : 'त्रिशूल', 'क' भाग में 'तुलना के प्रदेश में' अंतर्गत हिंदी में तुलनात्मक आलोचना, तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की महत्ता, अज्ञेय और मर्ढेकर की कविता : तुलनात्मक अध्ययन। 'ड' भाग में 'व्यक्ति विशेष' अंतर्गत युगीन संक्रमण बोध के कहानीकार : अमृतलाल नागर, 'विपात्र' : बेचैनी का समाजशास्त्र रचती मूल्यवान कृति, सुधी समीक्षक, वैयाकरणिक तथा साहित्येतिहासकार डॉ. चंद्रभानु सोनवणे। साहित्येतिहास लेखक के रूप में सोनवणे जो तर्कसंगति, वैज्ञानिक दृष्टि व उपयोगिता का सम्यक आकलन करते हैं उसे लेकर डॉ. सतीश यादव के मतानुसार, "डॉ. चंद्रभानु सोनवणे लिखित हिंदी साहित्य का सही इतिहास नयी सोच का नवीनतम अविष्कार कहा जा सकता हैं, जो हिंदी साहित्य की परंपरा का पुनरपाठ, पुनरशोधन, ओर पुनरमूल्यांकन करता है।'[६] 'इ' भाग में भारतीय भाषाओं की लोकोक्तियों में जातीय द्वेष-भाव रोजगार निर्माण में हिंदी का योगदान। उपर्युक्त लेखों के माध्यम से रचना विचार के स्वराज

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2022 Special Issue 04 Volume III SJIF Impact- 5.54

खोलती है तथा विमर्शों के दौर का जायजा लेती है। यह ग्रंथ असल में अपने आप से संवाद है। इस ग्रंथ की विशिष्टता यह है कि लेखक-आलोचक यादव नयी स्थापनाएँ देते हैं। इस ग्रंथ को महाराष्ट्र राज्य हिंदी के साहित्य अकादमी का आचार्य नंददुलारे वाजपेयी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

'अज्ञेय और मढेंकर का रचना कर्म: तुलनात्मक अध्ययन' यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स के द्वारा प्रकाशित ४०३ पृष्ठों का ग्रंथ है। इस ग्रंथ में दो भिन्न भाषी, भिन्न प्रदेश, भिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में पले साहित्यकारों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का अध्ययन किया है। डॉ. सतीश यादव के मतानुसार, "इन दोनों रचनाकारों ने अभिव्यक्ति के स्तर पर नये प्रयोग किए हैं। कथ्य, संवेदना, चरित्र, भाषा और शैली के स्तर पर नूतनता का दामन पकड़ा है। अज्ञेय और मढेंकर ने भारतीय साहित्य को नये सरोकारों से मंडित किया है। अपने समकालीन समाज जीवन के प्रश्नों से जुड़ते हुए वैश्विक मनुष्य को स्थापित करने का सजग प्रयास किया है। विशेषत: आधुनिक भावबोध, प्रयोगशील वृत्ति, चिंतनशील दृष्टि और वैविध्यपूर्ण अभिव्यक्ति से भारतीय साहित्य को समृध्द करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संवेदना, शैली, चरित्र, शिल्प और भाषा के स्तर पर उनके योगदान को भारतीय समाज और साहित्य का सुधी पाठक हमेशा याद करता रहेगा।"[७]

समीक्षा के साथ-साथ डॉ. सतीश यादव ने कुल-मिलाकर ११ ग्रंथों का संपादन किया है। संपदित ग्रंथ -

१) 'पथिक' विशेषांक – कविवर हरिवंशराय बच्चन पर केंद्रित, डॉ. हरिवंशराय बच्चन प्रबोधन प्रतिष्ठान, २) अहमदपुर अर्वाचीन हिंदी काव्य –तन्मय प्रकाशन, परभनी ३) निबंध -सौरभ - वाणी प्रकाशन, दिल्ली ४) साहित्य भारती - वाणी प्रकाशन, दिल्ली ५) गद्यकार अज्ञेय तथा उनकी रचनाधर्मिता (खंड-२) यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली ६) कवियों के कवि - अज्ञेय –यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली ७) गजानन माधव मुक्तिबोध: सृजन और संदर्भ - शौर्य प्रकाशन, लातुर ८) हाशिए का समाज और हिंदी - मराठी साहित्य - अरुणा प्रकाशन, लातुर ९) लोकधर्मी लोकचिंतक – डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे – परिदृश्य प्रकाशन, मुंबई १०) गीत गाएँ विज्ञान के – यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली ११) खोज एहसासों की - लेखक डॉ. पंडित विज्ञासागर, अनुवाद संपादन डॉ. सतीश यादव, यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली। इस समीक्षात्मक लेखन तथा संपादन से लेखक की प्रतिभा, अध्ययनशीलता तथा मौलिक समीक्षा दृष्टि का निरंतर अध्ययन, अध्यापन-लेखन करनेवाले व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। हिंदी की सेवा में वे निरंतर है इस कारण उन्हें अनेक सम्मानों से सम्मानित किया गया है।

डॉ. सतीश यादव का संपादन कौशल विशेष उल्लेखनीय है। आपकी संपादन की कुल ११ पुस्तकें हैं, जिसमें सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के साहित्य का मूल्यांकन दो खंडों में, ग. मा. मुक्तिबोध की जन्मशती के उपलक्ष में उनके साहित्य में सृजन और संदर्भ की पडताल, अप्रतिम निंबधों का संकलन 'निबंध सौरभ', 'साहित्य भारती' जैसी अनुपम कृति, हाशिए के समाज पर हिंदी-मराठी के विद्वानों से लिखवाना तथा अपने गुरुजी वरिष्ठ समीक्षक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे पर केंद्रित 'लोकधर्मी लोकचिंतक' डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे' ग्रंथ विज्ञान साहित्य में जिन को विशिष्ट पहचान हैं वरिष्ठ लेखक, वैज्ञानिक तथा पूर्व कुलपति डॉ. पंडित विद्यासागर के दो मराठी ग्रंथों का हिंदी दृष्टि के परिचालक हैं।

संपादन के अंतर्गत डॉ. यादव द्वारा संपादित अज्ञेय (दो खंड) पर विशेष चर्चा युवा समीक्षक तरुण ने की है। वे लिखते हैं, " अज्ञेय की रचना धर्मिता पर संपादित इन पुस्तकों के आने से पहले कई बार लगता था कि अज्ञेय के कृतित्व और व्यक्तित्व पर आई पुस्तकें अज्ञेय के जीवन संदर्भो का विश्लेषण करते हुए यह जानने की उत्सुकता में तल्लीन रहती हैं कि अज्ञेय क्या थे? किंतु डॉ. सतीश यादव द्वारा संपादित पुस्तकों में पहली बार 'अज्ञेय' के अज्ञेय होने की उपलब्धि स्वरूप लेते हुए अज्ञेय क्या नहीं हो सके इसे भी समाहित करने का प्रयास है। इस दृष्टि से डॉ. सतीश यादव का प्रयास सराहनीय है।" [८]

सम्मान : १) उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार (स्वा.रा.ती.म. वि. नांदेड), २) सरस्वती संगीत महाविद्यालय, लातुर की ओर से 'गुरू गौरव पुरस्कार', ३) जे.एस. पी.एम. लातूर संस्था की ओर से 'राष्ट्रभक्ति स्वामी विवेकानंद पुरस्कार ४) महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई की ओर से 'आलोचना का स्वराज' इस ग्रंथ को आचार्य नंददुलारे वाजेपयी समीक्षा पुरस्कार से नवाजा गया।

सारांश :डॉ. सतीश यादव बहुमुखी प्रतिमा के धनी हैं। निष्णात अध्यापक, बेलौसवक्ता, सुधी आलोचक, कुशल संगठक तथा सजग समाजकर्मी के रुप में विख्यात हैं। हिंदी भाषा साहित्य के प्रति आपकी निष्ठा बेजोड हैं। पूरे महाराष्ट्र में 'साहित्य, संस्कृति भवन' दीपस्तंभ की भाँति हैं, जो आपके नेतृत्व का प्रदीयमान है। आप का आलोचना कर्म निश्चित ही नयी संभावनाओं को बीजवपन करने वाला है। महाराष्ट्र के साहित्य-समीक्षा जगत में आप स्थापित हो रहे हैं, यह हमारे लिए हर्ष का विषय हैं।

डॉ. सतीश यादव का हार्दिक अभिनंदन तथा अनेक शुभकामनाएं । भविष्य में भी वे इसी तरह हिंदी आलोचना का क्षेत्र समृद्ध करते चलें।

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2022 Special Issue 04 Volume III SJIF Impact- 5.54

संदर्भ :

१. हिंदी के कालजयी उपन्यास : एक पुनर्मूल्यांकन, डॉ. सतीश यादव, विकास प्रकाशन, कानपुर, पृ. ३५४
२. हिंदी के कालजयी उपन्यास: एक पुनर्मूल्यांकन, डॉ. सतीश यादव, विकास प्रकाशन, कानपूर, पृ. ३५५
३. हिंदी के कालजयी उपन्यास: एक पुनर्मूल्यांकन, डॉ. सतीश यादव, विकास प्रकाशन, कानपूर, पृ. ३५६
४. आधुनिक विमर्श : विविध आयाम, डॉ. सतीश यादव, मानसी पब्लिकेशन्स, पृ. ८४
५. आलोचना का स्वराज, डॉ. सतीश यादव, यहा पब्लिशर्स एडं डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. ४०
६. आलोचना का स्वराज, डॉ. सतीश यादव, यश पब्लिशर्स एडं डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. १३०
७. अज्ञेय और मर्ढेकर का रचना कर्म, डॉ. सतीश यादव, यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. ३९५
८. उम्मीद, जुलाई-सितम्बर, २०१४, संपा. जितेन्द्र श्रीवास्तव, लखे –'अज्ञेय की रचनाधार्मिता : सीस कटाए भुई धरि, तरुण, पृ. २३६

□ □ □

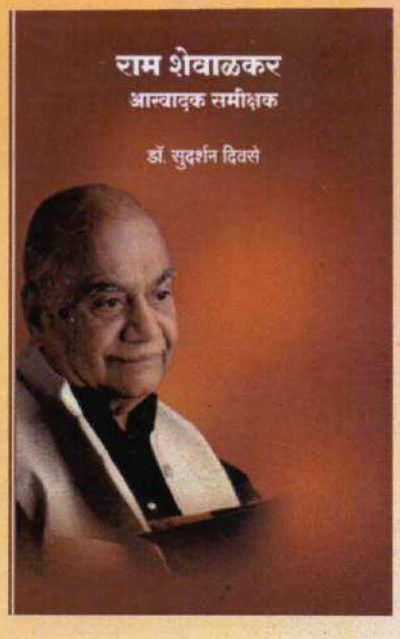

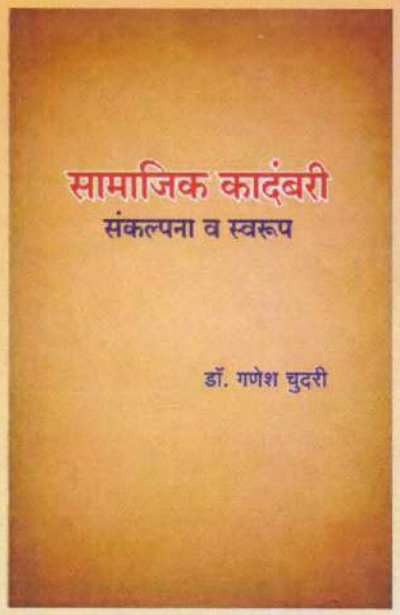

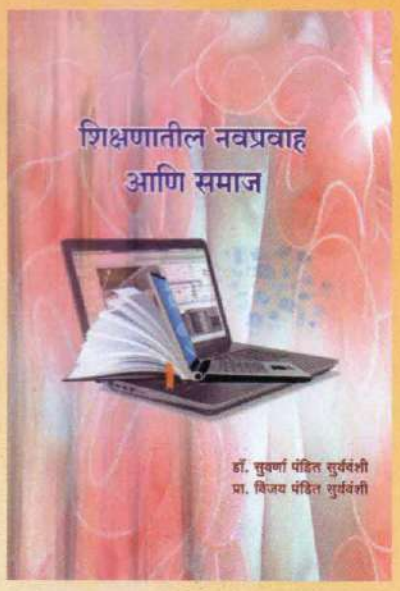

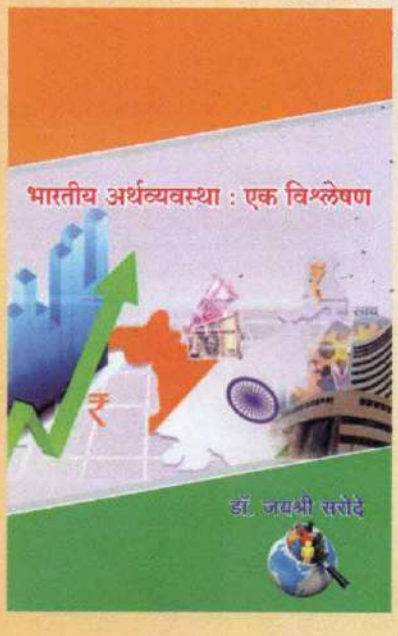

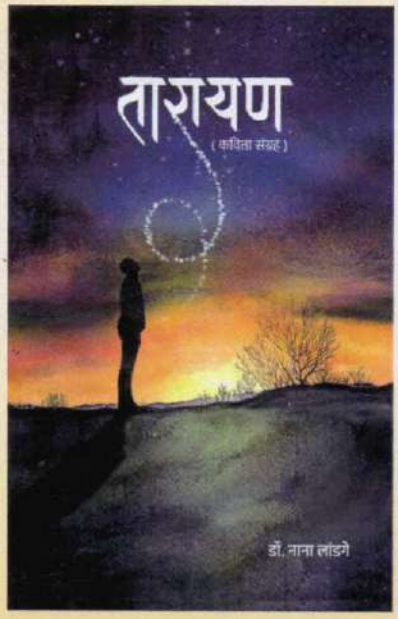

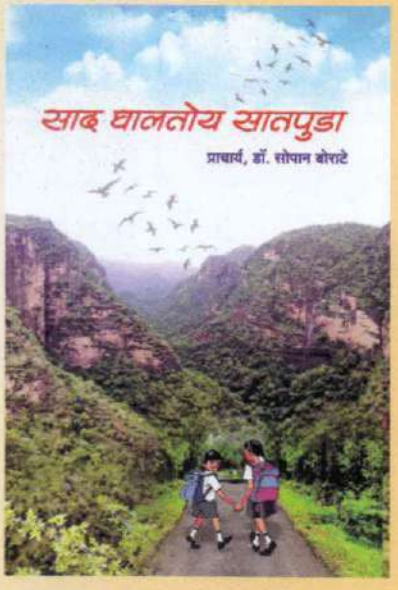

For All Types of Books Publication with ISBN Number Please Contact

AKSHARA PUBLICATION

Plot No.143, Professors Colony, Near Biyani School, Jamner Road,
Bhusawal Dist. Jalgaon. Maharashtra 425 201. Mob. 09421682612

ISSN 2582-5429